हमारा नया साल

चैत्र माह की मोहक छटा दृश्य सुहाना होता है।
सोंधी सोंधी माटी महके मन मस्ताना होता है।।
चैत्र माह की नोमी तिथि को जब राम जन्म होता है।
हम सनातनियों का मित्रों जबसे साल नूतन होता है.....
***
जब सूरज की रश्मि संग मोहक सवेरा होता है।
जब पीली पीली सरसों से हर खेत सजा होता है।।
जब पृथ्वी पुत्र का चेहरा खुशी से चमचम होता है.....
***
डालडाल चिड़िया चहके जब कोयल तान सुनाती हैं।
हर सू बजे झांझ मृदंग होली की सुंदर रुत आती है।।
प्रकृति संग जीवजग में नईउमंग का प्रस्फुटन होता है.....
***
ठंडी ठंडी हवा चले बागों में सुंदर पुष्प खिले।
गीत गाते मधुकर मीठे प्यासे अली कली जब मिले।।
हर सै आमंत्रण देती मिलन का मौसम होता है.....
***
नए नए पेड़ लताएं, नव यौवन हर तरफ दिखता है।
तनमन मस्ती में रंगा कणकण खूबसूरत लगता है।।
बसंत पंचमी कलम पूजन तब सृजन मनोहर होता है.....

- गीतकार मनोहर सिंह चौहान मधुकर
जावरा जिला रतलाम मध्य प्रदेश

भारतीय नव वर्ष

1.
चैत्र नवरात्रि शुभ दिवस, माता पूजन चाव।
मनु शतरूपा अवतरण, पृथ्वी प्रादुर्भाव।।
2.
चैत्र नवरात्रि के दिवस, देवी माँ सत्कार ।
हिन्दू गणना काल का, यह दिन है आधार ।।
3.
समय काल गणना शुरू, भारतीय अभियान ।
शून्य -पहाड़े %ग्रदसमद % दिया गणित का ज्ञान ।।
4.
पर्व %गुड़ी पड़वा % मने, महाराष्ट्र अरु देश ।
खुशी शांति का हो उदय, सब कुछ बने विशेष ।।
5.
नया वर्ष पड़वा गुड़ी, हो समृद्धि सुख धाम ।
सिद्ध सभी शुभ कर्म हों, बढ़े खुशी आयाम ।।
6.
नवल वर्ष में मिल सके, सबको नई उमंग ।
समरसता पग पग मिले, रहें सभी हम संग ।।
7.
भले सदा जगते रहें, और सोयँ शैतान ।
जो कुछ जीवन में मिले, बाँट खुद इंसान ।।
8.
नवल वर्ष की नव किरण, नवल उषा शृंगार ।
सिंदूरी आकाश में, उपजें नए विचार ।।
9.
देह तरोताजा लगे, मन उमंग सत्कार ।
नई प्रगति के छोर को, छूने को तैयार ।।

- प्रबोध मिश्र 'हितैषी', बड़वानी

आर.बी.आई. द्वारा उपभोक्ता का भी ध्यान रखा जाना चाहिए

रिजर्व बैंक ऑफ़ इंडिया के द्वारा घोषित निर्देश तीन एवं पांच बार से अधिक ट्रांजेक्शन अर्थात एटीएम से राशि की निकालने पर कोई शुल्क नहीं लगेगा ,किंतु तीन बार से अधिक एक महीने में यदि रकम या धनराशि निकाली जाएगी तो उसके लिए अलग से अतिरिक्त कर के रूप में टैक्स लिया जाएगा। बिल्कुल आम आदमी की सुविधा के लिए यह निर्णय बहुत अच्छा है। किंतु ठीक इसके विपरीत यह भी आदेश निकाल देना चाहिए कि यदि एटीएम से रकम या राशि के निकासी नहीं होती है , जबकि उसे राशि की आवश्यकता अधिक होती तब या तो सर्वर या लिंक फेल हो जाती है। या आउट ऑफ कंट्रोल जैसी स्थिति में उपभोक्ता अपनी राशि को निकाल नहीं पाते हैं और बिना राशि निकाले हुए अपने आप को ठगा सा महसूस करता है। तो ऐसी स्थिति में रिजर्व बैंक आफ इंडिया को भी उपभोक्ता के पक्ष में निर्णय देना चाहिए कि यदि कोई भी बैंक द्वारा स्थापित एटीएम मशीन से राशि का भुगतान नहीं होता है, तो ऐसी स्थिति में भी उन्हें संबंधित बैंक को पेनल्टी लगाई जानी चाहिए। जिसमें दोनों पक्षों को उपभोक्ता और बैंक दोनों पर समान रूप से नियम लागू होगा ।अन्यथा यह निर्णय एक पक्षीय ही रहेगा ।

- पं.रामगोपाल शर्मा गुरुजी
निदेशक- प्रज्ञाश्रय शोध संस्थान

गणगौर पर्व: निमाड़ और महेश्वर की अनुपम सांस्कृतिक आभा

गणगौर पर्व भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख उत्सव है, जो स्त्रियों के सौभाग्य, प्रेम और समर्पण का प्रतीक माना जाता है। विशेष रूप से राजस्थान, मालवा, निमाड़ और गुजरात में इसे बड़े श्रद्धा और भक्ति भाव से मनाया जाता है। इस पर्व में माता गौरी (गणगौर) और भगवान शिव (ईसर) की पूजा की जाती है। महेश्वर और निमाड़ में गणगौर उत्सव न केवल धार्मिक भावना से जुड़ा हुआ है, बल्कि यह क्षेत्रीय संस्कृति, पारंपरिक लोकगीतों, नृत्य, सामाजिक समरसता और ऐतिहासिक धरोहरों का भी जीवंत प्रतिबिंब है।

गणगौर पर्व की शुरुआत होलिका दहन के अगले दिन से होती है। इस दिन होलिका के जले हुए कंडोलिया या बड़कुलों को इकट्ठा कर गणगौर के ज्वारों की मिट्टी में मिलाया जाता है। गांवों और नगरों के पुरुष इस दिन से खेतों या नदी किनारे से मिट्टी एकत्र करने में जुट जाते हैं। यह मिट्टी विशेष रूप से ज्वारों के लिए तैयार की जाती है, जिससे चैत्र कृष्ण एकादशी को गणगौर के जवारे बोए जाते हैं। यही वह समय होता है जब गणगौर के पारंपरिक गीत गूंजने लगते हैं, और हर शाम गणगौर की बाड़ी में मंगल गीत सुनाई देने लगते हैं।

गांवों में कंवारी लड़कियां 'पाती' खेलने खेतों या आम-जामुन के पेड़ के नीचे जाती हैं। वे पारंपरिक खेल खेलती हैं और बारी-बारी से अपने घरों से प्रसाद लेकर आती हैं। इस खेल में एक लड़की को दुल्हन और एक को दूल्हा बनाया जाता है, फिर वे घर-घर जाकर पाती मांगती हैं। इस दौरान उनके साथ हंसी-मजाक और मस्ती का माहौल रहता है। गणगौर तीज तक यह खेल रोजाना खेला जाता है। आखिरी दिन, सभी कन्याएं इकट्ठा होकर पाती के पैसों से परमल (लाई) और धानी (मूंगफली) खरीदती हैं और आपस में बांटकर खाती हैं। यह एक सामाजिक जुड़ाव का पर्व भी है, जिसमें पूरा गांव आनंद लेता है। चैत्र शुक्ल पक्ष की त्रिज्या तिथि को गणगौर त्यौहार का शुभारंभ होता है गणगौर तीज के नाम से जाना जाता है 30 दिन मां पूरी बॉडी से पूरा संसार पूछता है और फिर उन जवानों को गणगौर के रथ में सजाकर अपने-अपने घर ले जाते हैं यहां पर सुहागन महिलाएं गणगौर को अपने सिर पर सजाती है और पुरुष स्वर्ग उसे महिला के पैरों को छोता है फिर कहना चाहूंगी महिला पुरुष क्या समानता कहां दिख रही है जहां हर छोटा से बड़ा आदमी तत्पर रहता है हर उसे महिला के पैर धोने के लिए जिसके सिर पर गणगौर सजी रहती है कहते हैं पुरुष झुकता नहीं है लेकिन सनातन धर्म में नारी को सदा ही पूजनीय माना गया है और यह त्यौहार इस बात की स्पष्ट को बयां करता है अपने-अपनेघरोंआकर गणगौर एक बिटिया की तरह खुशियां लेकर आती है पूरे घर में उत्साह तीन दिन तक बना रहता है इस दिन पूरा कुटुम एक घर यार की तरह एक ही घर भोजन करता है मां की पूजा पूरा परिवार मिलकर करता है शाम को मन को बाहर निकाल कर घर की औरतें चारों तरफ गिर बनाकर मां को बीच में रखकर मधुर गीत गाती है और मां को पानी पिलाया जाता है पानी पिलाने की रस्म चांदी की अंगूठी से की जाती है अब इसमें अगर विज्ञान जोड़ें सुचित्रा लगने के बाद गर्मी बढ़ जाती है चांदी की तासीर ठंडी मानी गई है इसीलिए गर्मी का प्रभाव ज्यादा ना पड़े चांदी का सिक्का या चांदी के अंगूठी का पानी पीना सेहत के लिए भजनों के साथ बीते जाती है और प्रसाद के रूप में मक्के और ज्वार की धाणी जिसे तमोल कहा जाता है बाटी जाती है मक्का और ज्वार की तासीर ठंडी होती है ढोल के ठप मंडल के ताप और बजे बजे के साथ मां को नगर भ्रमण पर ले जाते हैं गांव में आज भी रिवाज है

एक जगह पर सभी माता को स्थापित किया जाता है और उसके चारों तरफ पति-पत्नी दोनों जोड़ी से पूरे गांव के लोग उनकी परिक्रमा करते हैं और अपने आने वाले सुख जीवन की मनोकामना मांगते हैं वहां से माता को अब उसे घर में विराजित करने के लिए ले जाया जाता है जहां पर रथ बढ़ाने की अर्थात वह इंसान जो पूरे गांव को अब खाना खिलाएगा और पूरी गणगौर को अपने घर में एक दिन रोकने की मनोकामना करता है उसके घर में यहां पर अब रथ या गणगौर आदमी वर्ग उठाते हैं और पीछे अपने जीवनसाथी के साथ में आगे बढ़ते हैं यह मधुर क्षण हर पति पत्नी के लिए निर्माण में बहुत ही सौभाग्य का पाल माना जाता है रात भर उसे घर में फिर भजनों के साथ बीते जाती है और प्रसाद के रूप में मक्के और ज्वार की धाणी जिसे तमोल कहा जाता है बाटी जाती है मक्का और ज्वार की तासीर ठंडी होती है इसीलिए चैत्र के इस गर्मी में यह आपको ठंडकता प्रदान करेगी।

महेश्वर, जिसे अहिल्या नगरी भी कहा जाता है, यहाँ गणगौर पर्व अत्यंत भव्यता से मनाया जाता है। माँ अहिल्या बाई होल्कर ने इस पर्व को विशेष महत्व दिया था और उनकी पहल पर महेश्वर में गणगौर उत्सव को राजकीय स्वरूप मिला। उनके शासनकाल में यह पर्व महलों से लेकर जनसामान्य तक, सबके लिए उत्सव का प्रतीक बना। गणगौर का तीन दिवसीय उत्सवः भव्य समारोह महेश्वर में गणगौर का उत्सव दो रातों तक चलता है। यह केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि संगीत, नृत्य, भजन-कीर्तन और परंपरागत रीति-रिवाजों का संगम होता है। पहली रातः नगर भ्रमण और पूजन गणगौर की सवारी महेश्वर के राजमहल से निकलती है और नगर भ्रमण करते हुए नर्मदा तट तक जाती है।

महिलाएं सिर पर गणगौर रखकर शोभायात्रा में शामिल होती हैं और पारंपरिक गीत गाए जाते हैं, जैसे–

गौर आई सावन घनघोर,छम-छम बाजे घुंघरू, आई गौर गणगौर।

नर्मदा घाट पर विशेष तैयारी होती है, जिसमें दूर-दूर से श्रद्धालु भाग लेते हैं।

दीपों की जगमगाहट और नर्मदा की लहरों पर उनकी छवि अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करती है।

दूसरी रातः सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ और विसर्जन

इस रात गणगौर पूजन के बाद सांस्कृतिक परिवेश और गणगौर गीतों का कार्यक्रम होते हैं।

महिलाएं पारंपरिक वेशभूषा में लोकनृत्य करती हैं। नरमुंडे पर पालकी, ईसर आयो घोड़ी निमाड़ की गणगौरः लोक परंपराओं का रंग

निमाड़ में गणगौर की सवारी बड़े धूमधाम से निकाली जाती है। यहाँ यह केवल महिलाओं का पर्व नहीं, बल्कि पूरे समाज का उत्सव होता है। इस दौरान महिलाएँ नीम की पत्तियों और मेहँदी से अपने हाथों को सजाती हैं, जो इस पर्व की खासपरंपरा है। निमाड़ में गणगौर के दौरान गाए जाने वाले कुछ पारंपरिक गीत इस प्रकार हैं–

गौर माता चालै सजी सवारी,
साथ में ईसर घोड़ी सवारी... गणगौर और सामाजिक समरसता

महेश्वर और निमाड़ में गणगौर का पर्व सामाजिक समरसता का प्रतीक भी है। इस उत्सव में न केवल महिलाएँ, बल्कि पुरुष और बच्चे भी समान रूप से भाग लेते हैं। खासकर महेश्वर में गणगौर का आयोजन सामुदायिक एकता को प्रकट करता है, जहाँ सभी नर नारी ईसर और गौर के भाती गणगौर को सिर पर रख कर नृत्य करते हैं। हिंदु लोग एक साथ मिलकर उत्सव मनाते हैं।

स्वाति सिंह साहिबा
महेश्वर

।।बौरा रहे हैं ।।

वे
आम की तरह
बौरा रहे हैं ।
मधुमास में -
ऐसे मदमस्त हुए ।
फूलों की मार से -
वे पस्त हुए ।
वे
मकरंद चूस -
भौंरा रहे हैं ।
आम्रकुंज के -
वे हुए दीवाने ।
कोकिला - से -
वे सुबह से गुंजाने ।
वे
भंवरों जैसे -
दौरा रहे हैं ।
कलियों बिन -
उनका जीवन अधूरा ।
नींद बिना -
ज्यों हो न सपना पूरा ।
वे
प्यार का पुष्प -
कोरा रहे हैं ।
कभी -
फागुनी - बयार - से बहे ।
मधुमास से -
ज़ियादा पतझड़ सहे ।
वे
मुहब्बतों के -
औरा रहे हैं ।

- अशोक आनन,
मक्सी

दोहे तरुण

गली- गली, हर राह पर, घूम रहे हैवान।
रक्त पिपासू भेड़िए, सूरत से इंसान।।

मासूमों को फांसते,दे लव लॉलीपॉप।
फिर गिद्धों सम नोचते, रोते हैं मां बाप।।

तिलक लगा, मस्तक सजा,बनते राजा राम।
पर रावण से भी घृणित,नीच करें यह काम।।

कब समझेगी बेटियां,इनकी लोमड़ चाल।
मेंढक हैं यह कूप के,अपना ताल विशाल।।

मात-पिता को दे रहा,सुन लो उचित सलाह।
बचपन से ही ज्ञान की, आप दिखाएं राह।।

धर्म ध्वजा का मान हो,शपथ उठाओ आज।
महाकाल के तेज पर, करो सभी अब नाज।।

असुर पुरातन काल से, करते आए पाप।
मगर सनातन सत्य है,इसका तेज प्रताप।।

- पंकज शर्मा 'तरुण '
पिपलिया मंडी

चेत्र प्रतिपदा

नव संवत्सर
में
चित्त-चिंतन चरित्र
की
होगी पवित्रता
प्रेम एकता विश्वास
निखरेगा
महकेगा
सदभाव की शुद्धता
एकता प्रगति
खुशहाली ठमके
ध्येय व व एकनिष्ठता
अर्थ
से
कमजोर को मिटे
सहयोग लो
आएगी बलिष्ठता
मजबूत
होगी
बड़ों से घनिष्ठता
देश के अंदर
तथा
घर में
न होगी अनिष्ठता
प्रभु से
करें कामना
कि
कम न हो
हमारी कर्मनिष्ठता।

संस्कारों की चेतना जगायेंगे

अवगुणों को हम दूर भगायेंगे
आतंक अलगाव व नफरत को
भूल
प्रेम एकता विश्वास के फूल
खिलायेंगे
कर्मवीर शब्दवीर हमेशा से
मातृभूमि का गौरवगान बढ़ायेंगे
बातूनी हवा से लगता जख्म
सबक तो उसे जिव्हा से
भगायेंगे
न भूले आन बान शान प्रदीप
सत्कर्म व सत्धर्म में कुछ कर
दिखायेंगे

लोगों का हक छिन-छिन

लोगों का हक छिन-छिन
पेट भरने हेतु उसे बीन-बीन
काट रहे अपने वे अच्छे दिन
कुछ पाने के लिए दिन गिन
भूख व भ्रष्टाचार का यह सीन
महकमों में पनपे अखबार में है
लीन
मन की आंखों को कौन देखे
जीवन बिताए बस भावों से
हीन।

नववर्ष

छाया हर्ष
मिटेगा दर्प
मरेगा
आतंक का सर्प
एक दूजे का
समझेंगे मर्म
तो
न होंगे
सदभाव में गर्म।

- प्रदीप शर्मा, महेश्वर

विक्रम संवत जब बदलता हैं तो अनेक लोग (साल पलटे के दिन) नीम के शर्बत का सेवन करते हैं, बहुत से लोग ऐसे भी है जो पूरे पखवाड़े इसका सेवन करते हैं !

छाया - ऋतुराज बुड़ावनवाला, खाचरौद (उज्जैन)

आपणो नवसंवत्सर

नया वर्ष को नयो उजारो ,
जागो भई, सब काम हमारो।
नई चेतना मन में जगाओ ,
धीरज धरो ने क्लेश भगाओ ।।

मीठा सब ती बोल ,बोल जो ,
द्वार मदद का, वे तो खोल जो ।
कड़वा , खारा वचन नी केणा,
तराजू पर सब शब्द तोल जो ।।

मां - बेना ती प्रेम राख जो ,
नशा की चीजा मती चाख जो।
विप्पर कदी नी वेणो भाया ,
सदा कुल की लाज राख जो ।।

परदेसा में खूब कमा जो ,
मां - बाप ने मती भुला जो ।
लाख जमानों भले ही बदले ,
मां - बाप ने गले लगाजो ।।

नई पीढ़ी अब अतरो जाण जो ,
नयो साल यो ही है आपणो।
अंग्रेजी ती दुनिया नापो,
तिथि ती है ब्रम्हांड नापणो!!
हिंदू नवसंवत्सर की हार्दिक शुभकामनाएं बधाइयां!!

- सुनील पोरवाल शेलु
मनासा , जिला - नीमच

खुशियों के फिर जाम

इस जग की तो बन गई देखो कैसी रीत
करता जिससे दोस्ती तोड़े उससे प्रीत

सुरक्षित भी अब ना रहे
मेरे अपने गांव
इंसान से मिलती नहीं
ठण्डी ठण्डी छांव

काम ऐसा आप करें
बिते सुहानी शाम
दिन रात पीते रहिये
खुशियों के फिर जाम

अपनी चादर देखकर फैला अपने पांव
जीवन भर मिलती रहे तुझको ठंडी छांव

खुद का हो नुक्सान अगर मत खेलो वो खेल
वरना जीवन में बने जैसे रमेश जेल

सोच समझकर तू बना रमेश अपना यार
जिससे भी तेरे मिले रमेश सभी विचार

काला है यदि आपका सारा ही किरदार
ऐसे में बनता नहीं कोई तेरा यार

पाले झूठे लोग ही हरदम देख रमेश
फिर करता है वो सदा जीवन भर ही ऐश

आजादी के बाद से आया गुंडा राज
गुंडो के हाथों हुआ देखिये आज ताज

रिश्वत बिन निपटे नहीं फाइल मेरे यार
आप लिफाफा दीजिये रखकर के उपहार

- रमेश मनोहरा, जावरा, मो. 9479662215

नवगीत

तितली फूल पात
सब उड़े उड़े
मौसम अंगड़ाई लिए
चुपके चुपके
खत सुधियों ने भेजे...
जज्बात मुट्ठी से
रेत की तरह बस
फिसले फिसले....
स्वप्न सजीले सपने
अपने उनके आस लगाए
असमंजस मे बैठ किनारे
न जाने क्यूं
बैगानों की बाहों में
चुपके से जा बैठे ...
चातक मन दौड़ लगाते
थोथें शीश महल बनाते
सब्र कहां यहां किसी को
अपने ही टांग अड़ाते
देकर टंगड़ी गिराते उठाते...
शह मात के चक्कर देखों
नीचा दिखाकर
गीत खुशियों के गाते....

लाल बहादुर श्रीवास्तव

धरा कह रही है

शीत,वर्षा व भीषण गर्मी,
सब कुछ तो सह रही है।
क्यों मानव करे मनमानी,
धरा हमसे यह कह रही है।।
पालन पोषण करते हुए भी,
सिसक सिसककर रो रही है।
औद्योगीकरण के प्रभावों से,
धरा हमारी गर्म हो रही है।।
चारों ओर प्रदूषण भारी,
नदियां प्रदूषित बह रही है।
हवा भी हो गई जहरीली,
फिर भी सबको सह रही है।।
सड़क व रेलमार्गों के जाल से,
वनों की दशा पतली हो रही है।
अपार परिवहन के साधन वहां,
हवा हमारी प्रदूषित हो रही है।।
निराश ओर हताश हो प्रकृति,
मानव की ओर निहार रही है।
अंकुश हो इन गतिविधियों पर,
धरा हमारी हमसे कह रही है।।
विश्व तापन से पर्वतों की,
हिम बहुत पिघल रही है।
समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा,
धरती हमारी सिमट रही है।।
महानगरों का कूड़ा करकट,
सब वह अपने में भर रही है।
इसी कचरे को खा खाकर,
गायें हमारी कई मर रही है।।
नहीं चाहती वो हस्तक्षेप हमारा,
फिर भी सब कुछ सह रही है।
उसे अब प्रदूषण मुक्त कर दो,
चीख-चीख कर वो कह रही है।।

- शिवलाल दांगी,अध्यापक, सुसनेर,
जिला- आगर मालवा

गुड़ी पड़वा- हमारा नववर्ष

गुड़ी पड़वा जिसे हिन्दू कैलेंडर में नववर्ष के रूप में मनाया जाता हैं। गुड़ी पड़वा दो शब्दों से मिलकर बना हैं, गुड़ी का अर्थ हैं विजय पताका और पड़वा का अर्थ प्रतिपदा तिथि से हैं। जिसे चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को मनाया जाता हैं। गुड़ी पड़वा को गुड़ी पड़वा के अलावा आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में उगादि नाम से जाना जाता हैं। गुड़ी पड़वा अनेक कथाओं से जुड़ी हुई हैं। महाराष्ट्र में इसे मराठा शासक छत्रपति शिवाजी महाराज की विजय के रूप में मनाया जाता हैं। ऐसी मान्यता हैं कि भगवान ब्रह्मा ने इस दिन सृष्टि का निर्माण किया था, इसलिए इसे सृष्टि के रचना के रूप में भी मनाया जाता हैं। जिस दिन भगवान राम ने बाली का वध किया था, उस दिन भी चैत्र माह की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि थी, इस तरह से यह रामायण से भी जुड़ा हैं। यह पर्व वसंत ऋतु के आगमन का भी प्रतीक हैं और रबी की फसलों की कटाई का भी प्रतीक हैं। यह पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत का भी प्रतीक हैं। इस दिन लोग घरों में साफ सफाई कर गुड़ी लगाते है। गुड़ी को तैयार करने के लिए बांस की लकड़ी पर पीला रंग या चमकीला बार्डर वाला साफ कपड़ा बांधा जाता हैं, उस पर नीम और आम के पत्तों को लकड़ी के ऊपरी हिस्से पर गोल आकार में बांधा जाता हैं, तांबे के कलश पर स्वास्तिक बनाकर उसे लकड़ी पर उल्टा लगाया जाता हैं और फूलों की माला पहनाई जाती हैं। और इस तरह से गुड़ी को तैयार किया जाता हैं। गुड़ी पड़वा पर तरह तरह की मिठाइयां बनाई जाती हैं, जिससे रिश्तों में मिठाइयों की तरह मिठास बनी रहे, और हमारा पूरा वर्ष अच्छा जाएं। गुड़ी पड़वा बुराई पर अच्छाई की जीत और अंधेरे पर उजाले का पर्व हैं।

- गार्गी जामड़ा, जावरा, जिला- रतलाम